

## कमलेश्वर की कहानी समीक्षा संबंधी अलोचना दृष्टि

निरंजन राय

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बैसवारा डिग्री कालेज, लालगंज, रायबरेली।

नई कहानी आंदोलन के दौरान जिन कथाकारों ने कहानी की रचनाशीलता को गतिशीलता दी और कहानी आलोचना को समृद्ध किया उसमें से एक प्रमुख नाम कमलेश्वर का भी है। कमलेश्वर एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने न सिर्फ कहानी ही रचा बल्कि कहानी आलोचना के लिए एक गंभीर प्रयास भी किया। उसी का सुचिंतित परिणाम है उनकी किताब 'नई कहानी की भूमिका'। कमलेश्वर ने सृजन एवं समीक्षा के स्तर पर कहानी को एक स्वस्थ वैचारिक भूमिका दी है, कहानी को सौंदर्य 'शास्त्रीय खेमे से निकलकर व्यापक एवं गहन सामाजिक दिशा से युक्त किया है। एक प्रकार से कमलेश्वर एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने अपनी कहानी कला में व्यक्तिक और सामाजिक संबंध दोनों को महत्व देते चलते हैं। उनका कहना है "कलाओं के विकास का आधार सामाजिक सांवधिक अस्तित्व है"।<sup>1</sup> कहानी का हर रचनात्मक एवं वैचारिक मोड और उसमें आने वाला हर परिवर्तन कमलेश्वर कहानियों में रेखांकित होता है। राजा निरबसिया, 'कर्स्बे का आदमी' 'खोई हुई दिशाएं' 'मांस का दरिया' 'जिंदा मुद्र' और 'बयान तथा अन्य कहानियाँ' आदि इनके अनेक कहानी संग्रह हैं।

कमलेश्वर नई कहानी की रचनाशीलता को काफी परिश्रम से सुधार कर सामने लेकर के आते हैं। उनका मानना है की नई कहानी के संबंध में लोगों में एक भ्रम है। क्योंकि वे समझते हैं कि यह भी नई कविता की तरह कोई आंदोलन है। जबकि कहानी और कविता के बोध में मौलिक अंतर है और उनके स्वर भी पृथक होते हैं। कहानी के नएपन के संदर्भ में कमलेश्वर का कहना है कि "ऐसा नहीं है कि नई उम्र के लेखक वातावरण विशेष में या भिन्न परिवेश में एक नए चरित्र नायक को पेश कर देने से नई कहानी के श्रेष्ठ बन जाते हैं। किसी विशेष व्यक्ति वर्ग या समूह के बारे में लिखी गई कहानी नई ही हो यह गलत है। पुरानी और नई कहानी के बीच बदलाव का बिंदु वैचारिक दृष्टि का है"<sup>2</sup> इस प्रकार हम देखते हैं कि कमलेश्वर नई कहानी और उससे पूर्व की कहानी के बीच के बदलाव को विचार के स्तर पर देखते हैं। दरसल यह वैचारिक बदलाव आजादी के बाद विकसित हो रहे भारत का यथार्थ है। जहां पर एक नए पढ़े लिखे मध्यवर्ग का उभार हो रहा है और इसी मध्यवर्ग का कमोबेस चित्रण हम नई कहानी में देखते और पाते हैं। साथ ही कमोबेसी कमलेश्वर भी इसी नए मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। चल करके कमलेश्वर यह स्पष्ट करते हैं की 'नई कहानी' पुरानी कहानी से किस तरह भिन्न है। इस विषय पर उनका विचार देखना लाजमी होगा। वे लिखते हैं "जो रास्ता था वह साहित्य से जीवन की ओर था, क्योंकि वे जीवन के प्रति या आदमी के सामने खड़ी भयावह परिस्थितियों और आसन्न संकट की ओर देखते हैं और समझते थे। वे साहित्य के चश्मे से जीवन को देख रहे थे और बहुत क्षुधा थे कि साहित्यकार का दर्शन अपनाया नहीं जा रहा है। नई कहानी ने इस जड़ता से अपने आप को अलग किया। नई कहानी ने जीवन की सारी संगतियों विसंगतियों जटिलताओं और दावों को महसूस किया। उसका रास्ता जीवन से साहित्य की ओर हुआ"।<sup>3</sup> वस्तुतः कमलेश्वर जिस बात की तरफ इशारा करना चाहे रहे हैं वह यह है कि अब कहानी की समीक्षा मात्र उसे एक 'कला का माध्यम' मान करके

नहीं बल्कि उसको समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा एवं समझा जाना चाहिए। इसका आशय यह भी है कि कमलेश्वर कहानी की पहचान के लिए यथार्थ एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाने की वकालत भी करते हैं।

नई कहानी जहां एक तरफ अपने समकालीन यथार्थ को संबोधित करती है तो वहाँ नई कहानी ने अपने रचनात्मकता के स्तर पर पर कुछ बदलाव भी किया है। इन्हीं बदलाव की शिनाख्त करते हुए कमलेश्वर कहते हैं कि नई कहानी ‘परिपाटी बद्ध रुढ़ अर्थों में कहानी को स्वीकार नहीं किया। यह एक ऐसा मोड़ था जो आंतरिक और बढ़ कर्म से हिंदी कहानी में आया। इसके अंतर्गत कहानी के फॉर्म तथा कथ्य दोनों स्तरों पर एक नवीन दिशा की खोज की गई’’।<sup>4</sup> नई कहानी अपने में विकसित होती आई है। इसने प्रेमचंद प्रसाद की कहानी कला को नए अर्थ तथा नए जीवन संदर्भों की ओर प्रस्तावित किया। एक प्रकार से यह देखा जाए तो नई कहानी अपने पूर्व की परंपरा का ही निरंतर विकास है।

नई कहानी की समीक्षा में आलोचकों एवं कहानीकारों के सामने ‘परंपरा’ का सवाल सदैव बना रहा। क्या नई कहानी अपने परंपरा से विच्छिन्न होकर के आगे बढ़ती है या अपने पूर्व परंपरा का ही विकसित रूप है। इस सिलसिले में कहानीकार कमलेश्वर का विचार देखना दृष्टव्य होगा ‘नई कहानी हिंदी कहानी का स्वर्ण काल है उसे मैं प्रेमचंद की परिपाटी का वैज्ञानिक विकास मानता हूं। नई कहानी ने विधा के रूप में कहानी को इतना महत्वपूर्ण बना दिया कि चित्रकार और पत्रकार भी कहानी लिखने लगे’’<sup>5</sup> साथ ही कमलेश्वर यह भी कहते हैं ‘‘नई कहानी जीवन को देखती या उसे लिखती नहीं। नई कहानी जीवन को जीती है’’।<sup>6</sup>

कहानीकार कमलेश्वर के यहां नई कहानी की समीक्षा में परंपरा के सवाल के अलावा जिन आलोचनात्मक युक्तियों को जगह मिली है उसमें ‘प्रमाणिकता’ ‘प्रतिबद्धता’ ‘अनुभूति की सच्चाई’ ‘भोगा हुआ यथार्थ’ ‘परिवेश’ आदि महत्वपूर्ण हैं। कहानी कहने और लिखने के सिलसिले में कमलेश्वर का दृष्टिकोण यह है कि ‘प्रमाणिकता एक ओर अनुभव की सच्चाई की शर्त है और दूसरी ओर सच्चाई की प्रवणता से झेलकर और तक पहुंचने की पहचान भी है’’<sup>7</sup> अर्थात् झूठ और असंगत से कहानी के शिल्प और कथ्य के स्तर पर बराबर बचते जाना ही सहजता की खोज अर्थात् प्रमाणिकता है। इस तरह नई कहानी के परिवेश से प्रमाणिक अनुभव की गंभीर संवेदनशील प्रतीत है।

‘अनुभव की प्रमाणिकता’ हिंदी कहानी समीक्षा के लिए एक प्रमुख प्रतिमान बनकर नई कहानी की समीक्षा के दौरान उभरकर आता है। जहां तक बात कहानीकार कमलेश्वर की है तो उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि वह बिना प्रत्यक्ष अनुभव अथवा अनुरोध के कभी कुछ नहीं लिखते। उनके लिए सामान्य आदमी की नियत से जुड़ा हुआ लेखन, एक तरह से अनुभव के क्षेत्र की प्रामाणिक पहचान, अनुभव के समय संगत संदर्भ, और अनुभव के अर्थ तक जानने की कोशिश यही उनकी रचनाओं का क्रम भी है। इस सिलसिले में कमलेश्वर का विचार है कि “प्रमाणिकता अर्थात् झूठ और असंगत को कहानी के शिल्प और कथ्य के स्तर पर बराबर तरासते जाना। संशिलष्ट यथार्थ को उसके सभी आयामों से खोज कर बिना किसी तनाव या अतिरिक्त रोमांटिक लगाव के अभिव्यक्त कर सकता है। प्रमाणिकता एक ओर अनुभव की सच्चाई की शर्त है तो दूसरी ओर सच्चाई को प्रमुखता से कर अर्थों तक पहुंचाने की पहचान भी है।”<sup>8</sup> नई कहानी में ‘प्रमाणिकता’ से जुड़ा हुआ पहलू है ‘अनुभव की प्रमाणिकता’। नई कहानी का कहानीकार किसी आरोपित विचार, दर्शन अथवा निष्पत्ति के स्थान पर अनुभव को महत्व देता है। नई कहानी की यही आंतरिक उपलब्धि है कि वह अनुभव के धरातल पर सार्थक होती है। कहानी में ‘परिवेश’ के संदर्भ में कमलेश्वर का कहना है ‘‘नया कहानीकार यह सब धर्म, दर्शन, तंत्र या मतवाद के मातहत नहीं, परिवेश में आकष्ट दुबे मनुष्य की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं के मातहत ही स्वीकार करता है’’।<sup>9</sup> वस्तुतः कमलेश्वर बतौर कहानीकार समीक्षक जिन आलोचनात्मक प्रतिमानों की बात करते हैं। उसका मुख्य प्रयोजन है कि कहानी में तात्कालिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हो एवं मनुष्य का

उसके परिवेश के साथ चित्रण किया जाए। महत्वपूर्ण बात यह है कि कमलेश्वर के यहां यथार्थ जड़ वस्तु नहीं है अपितु वह गतिशील रूप में ग्रहण होता है। वे लिखते हैं कि “यथार्थ कोई स्थिर तत्व नहीं है, वह निरंतर गतिमान है और उसके हजार पहलू हैं। जो आदमी को बदलते जाते हैं।” कमलेश्वर हिंदी के क्षेत्र कहानी की समीक्षा में ‘सांप्रदायिकता’ के विरोध की भी चर्चा करते हैं। एक तरह से सांप्रदायिकता विरोध को हिंदी कहानी की समीक्षा में लेकर के आते हैं। इसके साथ ही कहानी समीक्षा एवं लेखन के लिए धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो कि महत्वपूर्ण है। पूर्ववर्ती कहानियों में किस तरह पात्र चयन एवं चित्रण के स्तर पर सांप्रदायिक तत्वों भाव की अभिव्यक्ति हुई इसका विश्लेषण करते हुए वे कहते हैं “पात्रों के हिंदू ने हमारी पुरानी कहानी को जितना गुमराह किया है, शायद उतना किसी और चीज ने नहीं” |<sup>10</sup> और “उस दौर की अधिकांश कहानियों की औरतें हिंदू पत्नियां हैं, हिंदू बहने हैं, हिंदू ननदे हैं, हिंदू सास हैं..... मुसलमान वेश्याएं हैं और कुलटाएं हैं। आदमी हिंदू पति है, हिंदू भाई है, हिंदू ससुर हैं, मुसलमान गुंडे हैं और सब भ्रष्ट हैं। यह हिंदू इस हद तक हावी हुआ कि अनजाने ही हमारे लेखक भी हिंदू बन रहे उन्होंने मुसलमान पात्रों को नहीं छुआ” |<sup>11</sup> शायद यह अनजाना प्रयास नहीं था क्योंकि नई कहानी में जिस अनुभव की प्रमाणिकता एवं भोगा हुआ यथार्थ को पहचान गया उसने लेखक की संवेदना एवं संवेदना के विस्तार पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया और अनुभव को अप्रामाणिकता के दायरे में लाकर कर खड़ा कर दिया। यही कारण है की नई कहानी अपनी बहुत सी विशेषताओं के बावजूद मध्यवर्गी जीवन प्रतिनिधित्व करने वाली कहानी बन गयी।

## सन्दर्भ

1. मांस का दरिया (भूमिका), कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1977 पृ० 5
2. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, ईशान प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1991 पृ० 26
3. वही, पृ० 28
4. वही, पृ० 26
5. नयी कहानी के कहानीकारों की आलोचनात्मक दृष्टि, उषा चौहान, हिमाचल, पुस्तक भण्डार, प्रथम संस्करण, 1990, पृ० 150 से उद्घृत।
6. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, पृ०
7. वहीं, पृ० 15–16
8. वहीं, पृ० 16
9. वहीं, पृ० 87
10. वहीं, पृ० 19
11. वहीं, पृ० 20